पेड़ की पुकार

डॉ. दादूराम शर्मा
सिवनी, मध्य प्रदेश

भाई मनुष्य !
जब से तुमने आँखें खोली ––
मुझे तुमने अपना सतत सहचर पाया है
मेरे पालने ने तुम्हारे शैशव को दुलराया है
मेरे रसीले कंद–मूल–फलों ने तुम्हे शक्ति धर बनाया है
तुम्हारे आतप–तप्त तनु को दी मैंने शीतल छाया है
मेरी कुटिया ने तुम्हें वर्षा और सर्दी से बचाया है
मेरे वल्कलों ने तुम्हारी नग्नता को छिपाया है
मेरे कौशेय परिधानों और पुष्प–पल्लवों ने
तुम्हारी अंग–लतिका को सजाया है
मेरे क्रोड में पले पक्षियों के कलरव ने तुम्हे प्रातः जगाया है
मेरी विसर्जित प्राणवायु में तुम लेते रहे सतत साँस
मेरी ही ओषधियों ने दी तुम्हें स्वस्थ काया है
मेरे सहचर मेघों से मेरे ही इंगित पर
तुम्हारी इस धरा ने नवजीवन पाया है
मेरे बने हल ने भूमि की कोख से
तुम्हारे लिए पुष्कल अन्न उपजाया है
मेरी काष्ठ ने सुस्वादु भोजन पकाया है।
तुम्हारे यौवन ने शक्ति के प्रतीक रूप में
मेरी लाठी को अपनाया है
और वृद्धावस्था ने उसे सहारा बनाया है।
तुम्हारी मानवीय संस्कृति के आदिम स्त्रोत हैं मेरे तपोवन
जिनसे तुमने व्यष्टि और समष्टि का मुक्ति–पथ पाया है
जिनकी मंत्र ध्वनि ने दिग् दिगन्त को मुख बनाया है
राम का रामत्व पला था मेरी गोद में ही
मोहन की मुरली ने मानस सरसाया है
वाल्मीकि, व्यास और कालिदास आदि में
मुझसे ही जनमा कवित्व जिसने
तुम्हारे संस्कृति–कोष को समृद्ध बनाया है
बुद्ध ने भी बोध मेरे तले पाया है
सभ्यता के अरूणोदय से ही
अपनी वाटिका में तुमने मुझे लगाया है
और अपने हाथों से सींच–सींचकर मुझे बढ़ाया है।
एक–दूसरे के पालक और पालित का, संरक्षक–संरक्षित का
यह अटूट रिश्ता हमने सदियो से निभाया है।
फिर आई हमारे शवों पर पली–बढ़ी मशीनी सभ्यता !
उजड़े वन, बसे नगर लगे कल–कारखाने,
उठ गए हमसे बहुत ऊँचे तुम सभ्यता के दीवाने
कारखाने करने लगे नदियों का दूषित जल
चिमनियाँ और वाहन उगल रहे धुआँ अविरल

उनकी कर्णवेधी ध्वनि कर रही सबको विकल
तुम्हारे प्रश्वास से भर गया वायुमण्डल!
भूमि जल–वायु–ध्वनि–निर्मित यह पर्यावरण
होकर प्रदूषित अब खो बैठा संतुलन
हमारे अभाव में हमारे चिर सहचर
घिरते नहीं नभ में अब पूर्ववत् जलचर
घिरे भी तो बरसे बिना जाने कहाँ उड़ जाते
और चर अचर सब तरसते रह जाते
इस तरह काटकर हमें काट लिया अपना मूल
कितनी महँगी पड़ी तुम्हे मानव ! तुम्हारी भूल?
आओ फिर रोपो हमें करो हमसे प्यार
पर्यावरण – परिशुद्धि का सौंपे सब हमें भार
होगा ज्यों–ज्यों धरती पर हमारा विस्तार
त्यों–त्यों खुलेगा तुम्हारा उद्धार–द्वार
भाई मनुष्य ! भाई मनुष्य !

देश के सबसे बड़े भू–भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है।

–सुभाषचन्द्र बोस